बाल साहित्य समीक्षा में एकलव्य, भोपाल से प्रकाशित चार पुस्तकों की प्रस्तुत की गई है।

गोया किसी इरशाद का हासिल नहीं हूं मैं

स्वयं प्रकाश

1. गीत का कमाल
2. अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?

लोककथा का सर्वाधिक आकर्षक तत्व क्या होता है? उसमें युक्ति और ऱ्हेटोरिक का क्या महत्त्व होता है? क्या लोककथाएं भी अप्रासंगिक या समय बाहर होती हैं? क्या लोककथाओं का पुनर्पाठ या पुनर्लेखन किया जा सकता है? ये हैं वे सवाल जो 'एकलव्य' द्वारा प्रकाशित इन दो किताबों को देखकर मन में उठते हैं। 'गीत का कमाल' चार पंक्तियां भिन्न संदर्भ में कैसे चोर को पकड़वा देती हैं- इस सरल किस्से का बुन्देलखण्डी संस्करण है- जिसके ग्रहीता और भावक जाने कौन होंगे। अब तो गांवों के बच्चे भी इतने अबोध नहीं रहे कि ऐसे किस्सों को मूर्खतापूर्ण न समझें। न ऐसे चोर ही हैं जो 'मकान' की दीवार में 'सेंध' लगाकर चोरी करते हैं और किसी की आवाज सुनते ही भाग खड़े होते हैं। कहना पड़ेगा कि यह सरलीकरण आत्यंतिक है और मात्र मनोरंजन के लिए भी समय बाहर है और आज के जमाने में इतना पैसा खर्च करके इसे बच्चों के लिए परोसने का औचित्य समझ से परे है। इसमें से किसी नए अर्थ की उद्‌भावना भी नहीं होती और न इसका कोई पुरातात्विक या पौराणिक महत्त्व है जो इसे संग्रहणीय बनाता हो। किस्सा-कहानी सुनाने की बुनियादी अर्हता यहां भुला दी गई है। किस्सा-कहानी सुनाने की बुनियादी अर्हता यह है कि सुनाने वाले को सुनने वाले से ज्यादा इण्टेलीजेण्ट होना चाहिए।

दूसरी पुस्तक 'अप्पकुट्टन को तौलें कैसे?' आर्कमडीज के सिद्धांत का दृष्टांत है जिसे अलग-अलग परिवेश में इतनी बार इतनी तरह से कहा जा चुका है कि उसने लोककथा का रूप ग्रहण कर लिया है।

लेखक परिचय

हिन्दी के जाने-माने कहानीकार।
संप्रतिः सेवानिवृत्ति के बाद पूर्णतः लेखन के लिए समर्पित।

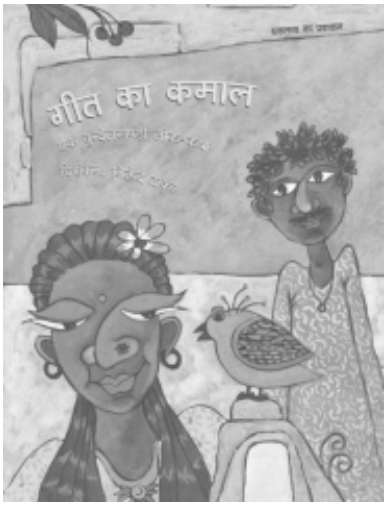

गीत का कमाल
प्रकाशक : एकलव्य
पृष्ठ संख्या : 32; मूल्य 70.00

लोकथाओं का पुनर्लेखन कैसे किया जा सकता है, इसका उदाहरण कैरन बैकस्टाइन द्वारा छह अंधे आदमी और हाथी वाली कथा का पुनर्लेखन है। हाथी राजकुमार का है। जब छह आदमी टटोलकर हाथी के आकर पर एकमत नहीं हो पाते तो राजकुमार उनसे कहता है 'जाओ, हाथी पर बैठकर पूरे गांव का एक चक्कर लगाकर आओ, क्योंकि हाथी को समझने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उसकी सवारी की जाए। अब आप पूर्व और पश्चिम की दार्शनिक दृष्टि पर बहस करते रहें लेकिन लेखक की नई सूझ ने एक सदियों पुरानी कथा का नवीनीकरण कर दिया।

एक अन्य उदाहरण थोड़ा शरारती है लेकिन आज के बच्चों की पकड़ से बहुत दूर नहीं। जैक एण्ड जिल, वेन्ट अप द हिल, टु फेच अ पेल ऑफ वाटर... आइ डोन्ट नो व्हाट दे डिड देयर ...बट दे केम विद अ डॉटर!!

'गीत का कमाल' के चित्र भी बुन्देलखण्डी लोक शैली में बनवाने की कोशिश की गई है। यह वैसा ही है जैसे आकाशवाणी अपने वाद्यवृंद से 'लोकगीत' बनवाने की कोशिश करती है।

दूसरी पुस्तक के चित्रों का और भी बुरा हाल है।

अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?
प्रकाशन : एकलव्य
पृष्ठ संख्या : 16; मूल्य : 30.00

साइकिल पर था कव्वा
प्रकाशक : एकलव्य
पृष्ठ संख्या : 20; मूल्य : 20.00

3. साइकिल पर था कव्वा
4. मेघ की छाया

'साइकिल पर था कव्वा' और 'मेघ की छाया' प्रभात की कविताओं के संग्रह हैं जिनमें इनकी क्रमशः 26 और 17 कविताएं संकलित हैं। प्रभात ने बच्चों के लिए कविताओं का एक सर्वथा नया मुहावरा सीखा है और पहली बार उसे थोथी तुकबन्दी, सीख या शिक्षाग्रत और उपदेशात्मकता से बाहर निकालकर वास्तव में इस साहित्य रूप तक लाए हैं जिसे कविता कहा जा सके। हिन्दी में इसकी शुरुआत सर्वेश्वर दयाल सक्सैना और उर्दू में गुलजार ने कर दी थी। प्रभात की छोटी-छोटी कविताएं वास्तव में कविताएं हैं और इसी विशेषता ने उन्हें स्थापित किया है, अतः वह हमारी प्रशंसा या प्रोत्साहन की मोहताज नहीं, अलबत्ता पुस्तक के गुणदोष पर बात की जा सकती है।

बच्चों की पुस्तकों में 'भूमिका', 'प्रस्तावना' या 'दो शब्द' का क्या काम? खासकर जब पुस्तक बीस पृष्ठ की ही हो। क्या यह अजीब नहीं है कि सारी पुस्तक बच्चों को संबोधित है, लेकिन भूमिका शिक्षकों-अभिभावकों-कवियों आदि को? दोनों पुस्तकों में सुशील शुक्ल ने एक-एक पृष्ठ की भूमिका लिखी है- जिसे देखकर ही मेरा माथा ठनका। लेकिन पढ़कर लगा यह मूल्यवान भी है और शायद जरूरी भी। हिन्दी काव्य आस्वाद पर कम ही विचार, प्रशिक्षण या बातचीत

उपलब्ध है। सुशील शुक्ल स्वयं भी कवि हैं और यहां उन्होंने प्रभात की कविताओं के बहाने काव्यचित्त की अद्‌भुत मीमांसा की है जो और कोई पढ़े न पढ़े यशोकामी बाल काव्य रचियताओं को तो जरूर पढ़ना चाहिए।

दोनों पुस्तकों के चित्र प्रसिद्ध कलाकार अतनु रॉय ने बहुत अच्छे बनाए हैं। अतनु रॉय के चित्रों में कार्टून और केरीकेचर, दोनों का मजा है और इस दृष्टि से वह शंकर और मारियो के यौगिक लगते हैं। उनकी रंग-रेखाओं की एक अलग मौलिक और मोहक पहचान भी है। लेकिन अफसोस कि यहां उनके चित्र (सिवा सुन्दर कवर के) बगैर रंगों के श्वेत-श्याम छापे गए हैं। पता नहीं ऐसा क्यों किया गया। मेरी समझ से तो इन चित्रों को रंगीन ही छापना चाहिए था और यही नहीं, हर पन्ने को प्लास्टिक कोटेड भी होना चाहिए था। भले ही इससे पुस्तक का दाम थोड़ा बढ़ जाता। इस पर सितम यह कि एक-एक पृष्ठ पर दो-दो कविताएं छाप दी गई हैं और नतीजतन उनके चित्र आपस में उलझकर रह गए हैं। जब आप प्रभात और अतनु रॉय की किताब छाप रहे हैं तो आपकी ऐसी तर्कहीन कंजूसी दोनों का सत्यानाश करने के बराबर है। यदि एक लेमिनेटेड पृष्ठ पर एक कविता और एक रंगीन चित्र होता तो यह एक अद्‌भुत पुस्तक बन सकती थी।

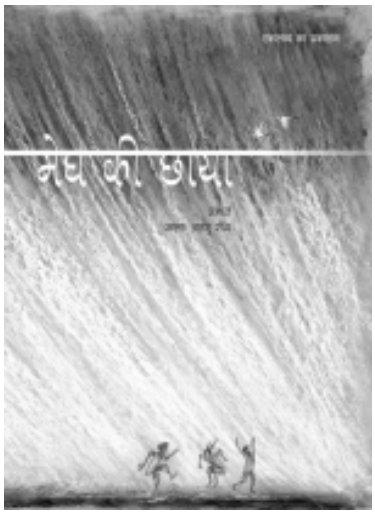

मेघ की छाया
प्रकाशक : एकलव्य
पृष्ठ संख्या : 20; मूल्य : 22.00

अब कविताओं के बारे में

यदि मैं विज्ञापन नहीं लिख रहा, समीक्षा लिख रहा हूं तो प्रभात को यह सुनने के लिए तैयार हो जाना चाहिए और सावधान हो जाना चाहिए कि उनकी कविता में एकसापन आता जा रहा है। उनकी कोई कविता एक अकेली पढ़ो तो चमत्कृत भी करती है आल्हादित भी, लेकिन यही कविताएं जब एक साथ किसी पुस्तक में एक के बाद एक पृष्ठ पढ़ी जाती हैं तो दोहराव और ठहराव महसूस होता है। मैं नहीं जानता इसका क्या कारण है। प्रभात को खुद इस पर सोचना चाहिए। हो सकता है ऐसा इसलिए होता हो कि उनकी शब्दक्रीड़ा अभिधा तक ही सीमित रह जाती है जबकि काव्य में रसनिष्पत्ति बहुधा व्यंजना से ही संभव हो पाती है। यह नहीं सोचना चाहिए कि बच्चे सिर्फ उछलकूद पसन्द करते हैं। विज्ञापन फिल्में इस बात का अच्छा उदाहरण हैं जिनमें एक मिनिट से भी कम समय में एक पूरी कहानी कह दी जाती है- कभी-कभी मार्मिक भी- और जिन्हें बनाने में हमारी श्रेष्ठ रचनात्मक प्रतिभाएं लगी हैं। अकेले-असहाय बुढ़ापे का सूनापन, दोस्ती के लिए कुरबानी, परस्पर सहानुभूति, ममता, वात्सल्य न जाने कितनी अनुभूतियां एक मिनिट से भी कम समय में यहां समेटकर संप्रेषित कर दी जाती हैं। कवि के पास कथ्य का संपूर्ण पाठ हमेशा उपलब्ध होना चाहिए। कविता सिर्फ शब्दक्रीड़ा या जीभ मरोड़ना नहीं है। जब सर्वेश्वर दयाल सक्सैना ने 'इब्न बतूता' लिखी थी, वह अच्छी तरह जानते थे कि बच्चे अभी सिर्फ इस शब्द के नाद सौन्दर्य से प्रभावित होंगे। लेकिन वह यह भी समझते थे कि बाद में जब बच्चों को पता चलेगा कि इब्न बतूता एक महान यात्री था, तो वे उसके बारे में सब कुछ जानने को उत्सुक हो उठेंगे। जब गुलजार ने 'चड्डी पहन के फूल खिला है' लिखा था तो वह दुनिया के प्रत्येक वस्त्रविहीन बच्चे की तुलना खिलते फूल से करने की महान और उदात्त भावना से ओतप्रोत थे। माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'नजरों की नजर उतारूंगा' को तो हम भूल ही गए हैं। अंग्रेजी में 'बा बा ब्लैकशीप' सरकार की टैक्स नीति पर एक करारा व्यंग्य प्रहार थी। प्रभात को कौतुक के आगे भी सोचना चाहिए। ◆